No. of Printed Pages : 6

MHD–12

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम. ए. हिंदी)

(एम. एच. डी.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2024

एम.एच.डी.-12 : भारतीय कहानी

समय : 2 घण्टे *अधिकतम अंक : 50*

***नोट : प्रथम** प्रश्न अनिवार्य हैं। शेष में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

---

1. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं **दो** की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 2×10=20

(क)हाय भगवान! माता-पिता ही अपनी बेटी को पाप के गर्त में धकेलते हैं। उनका क्या होगा ? इसका क्या होगा ? उन्होंने यह समझा होगा कि उनके मन्नत मानने से बेटी मरने से बच गई। परन्तु प्रत्येक

दिन वह जो काम करती है, उससे उसके जीवन का स्त्रीत्व ही दिन-दिन मर रहा है। यह उन्हें कैसे समझाए, जब यह बच्ची थी तब एक क्षण में मर जाने के बदले अब हर दिन, हर क्षण, तिल-तिल करके मर रही है, क्या वह यह बात समझते हैं ? नहीं, यही तो आश्चर्य की बात है, उसका पूर्ण विश्वास है कि वह जो कर रही है, ठीक है। वह कार्य भगवान को प्रिय है। उसके बचाए जीवन को इस प्रकार उपयोग में लाए तो उसकी प्रिय सेवा होगी ? विवाहित स्त्री जिस कार्य को बुरा मानती है, वह अपने उसी कार्य को जीवन का धर्म मानकर चल रही है।

(ख) पानी! पानी शब्द सुनते ही अविनाश की समस्त तंत्रिकाएँ जैसे जागृत हो गई। उन्होंने महसूस किया कि इस वक्त उन्हें पानी की सख्त जरूरत है।

लेकिन फिर भी उन्होंने आँख नहीं खोली। और आँख बंद किए-किए बोलना उचित नहीं था। मगर जवाब न पाकर शायद वे पानी न लाएँ, कहें कि रहने दो, रहने दो, डिस्टर्ब करने की जरूरत नहीं है। जागने से ही पानी पीने को मिल सकता है। अविनाश ने आँखें खोल दीं।

बड़े बेटे ने पूछा, बाबा पानी पीओगे ? बड़े बेटे का ऐसा स्वर कितने दिनों से नहीं सुना अविनाश ने ?

(ग) लेडेंग के लोगों को गुस्सा आया, वे आहत हुए, शोक किया उन्होंने, निराश हुए, लेकिन सहने के अलावा उन्हें कोई दूसरा उपाय सूझता नहीं था। लेकिन आम गैर-आदिवासियों को इस परिस्थिति से जितना दुःख हुआ होता, उन्हें उससे कहीं ज्यादा हो रहा था। आमगैर-आदिवासियों ने यह अनुभव तो

किया ही, इसके साथ ही उन्हें गहरे अपमान का बोध हुआ। बाघ हो या कुत्ता, जानवर उनकी दृष्टि में सिर्फ जानवर नहीं है। वे उसे आदमी की तरह ही समझते हैं, उसके काम को न्याय-अन्याय के काँटे पर तौलते हैं। इसलिए जो कुछ भी होता, वह उनकी दृष्टि में बुद्धिहीन, विवेकरहित, चेतनाहीन, जंतु की पाशविकता नहीं थी।

(घ) अबूझ बालक के सिवाय किसका ऐसा निर्मल हृदय हो सकता है ? बढ़ती उम्र और समझ के साथ सौ में से एक सौ पाँच इंसानों को कीचड़ में सनना पड़ता है। तब यह अकेली बानगी कैसे बची रह गई ? राजकुमारी के रोम रोम में धसा डर किसी अदीठ जादू के जोर से अदेर, अनन्त फख्र और हर्ष में बदल गया। इंसानों के जमघट में फकत इंसान नाम की कमी है। इस पुतले से मिलकर तो खुद

मौत भी अपना भाग्य सराहेगी। ऐसी मौत पर तो लाखों जीवन न्यौछावर! मारने से ज्यादा तो राजा का भी वश नहीं है। फिर मरने का डर न होने पर कैसी जोखिम ? कैसी हिचकिचाहट ? मरना निश्चित है, तब भी तमाम लोग मरने से डरते हैं।

2. 'ओऽरे चुरुंगन मेरे' कहानी में अभिव्यक्त मनोवैज्ञानिक चेतना को स्पष्ट कीजिए। 10

3. 'प्राणधारा' कहानी की अंतर्वस्तु पर प्रकाश डालिए। 10

4. 'जवाबो कार्ड' कहानी की मूल संवदेना को स्पष्ट कीजिए। 10

5. 'अपना अपना कर्ज' कहानी में व्यक्त मानवीय पीड़ा के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त कीजिए। 10

6. बांग्ला कहानी में आशापूर्णा देवी के योगदान पर विचार कीजिए। 10

7. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए : 2×5=10

(क) बाबूराव बागुल

(ख) इंदिरा गोस्वामी का लेखन जगत

(ग) 'पाँच पत्र' का जीवनदर्शन

(घ) 'टोबा टेक सिंह' कहानी का मंतव्य